Volume 1; Issue 1
January to March 2025

E-ISSN: 3048-8699

International Journal of History and Culture

Peer Review Indexed Refereed Journal

Quarterly International Research Journal

International Journal of History and Culture
E-ISSN: 3048-8699
https://www.journalofhistory.in/
Volume 1; Issue 1; January to March 2025; Page No. 1-7
Peer Review, Indexed and Refereed Journal
Received Date 21/04/2025, Accepted Date 22/04/2025

ताम्र पाषाणिक संस्कृतियों के विशेष सन्दर्भ में सरयूपार क्षेत्र की अधिवास प्रक्रिया

प्रो. आनन्द शंकर सिंह
प्राचार्य एवं विभागाध्यक्ष, ई.श.पी.जी. कॉलेज,
इलाहबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

सत्यम कुमार
शोध छात्र, प्रा.इ.सं.पू.वि. ई.श.पी.जी. कॉलेज,
इलाहबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

सारांश

मानव अपने उद्भव काल से लेकर आधुनिक युग तक पहुचने में विकास की एक लम्बी यात्रा तय किया है। प्राकृतिक आवासो से निकलकर मैदानी भागो में स्थायी बस्तियो को बसाने के क्रम में उसने विभिन्न संस्कृतियो को जन्म दिया जो समय के साथ पुष्पित-पल्लिवत हुई तथा कालान्तर में नष्ट हो गयी। परन्तु उनके द्वारा प्रयोग किए गए वस्तुओ और उनके क्रियाकलापो के चिन्ह, अवशेष के रूप में छूटते गए ।(कुशवाहा, 2021:1-5) पुरातत्वविद इन्ही अवशेषो का विश्लेषण कर उस संस्कृति को पुर्नजीवित करने का प्रयास करते हैं। प्रस्तुत लेख में सरयूपार क्षेत्र मे निवास करने वाले ताम्रपाषाणकालीन के मानवो के अधिवास प्रक्रिया पर प्रकाश डाला गया है।

मुख्य शब्द: अधिवास प्रक्रिया, संस्कृति, मृदभाण्ड, सरयूपार,पाषाण उपकरण ।

किसी भू-भाग पर मानव द्वारा व्यतीत की गयी जीवन शैली को जानने व समझने के के लिए उस क्षेत्र या स्थान के अधिवास प्रक्रिया को समझना आवश्यक हो जाता है। सर्वेक्षण एवं उत्खनन से प्राप्त पुरावशेषो के आधार पर पुरातत्वविद् किसी स्थान के पारिस्थितिकी, सामाजिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था का पुर्ननिर्माण करता है। वह पर्यावरण व भूगोल से पारिस्थितिकी व्यवस्था के बारे में जानकारी प्राप्त करता है तथा पुरातत्व एवं समाजशास्त्र से समकालीन मानव जीवन शैली को पुर्ननिर्मित करने का प्रयास करता है है। मानव अपने सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्रियाकलापो का निष्पादन किसी क्षेत्र विशेष मे करता है। अतः वहाँ उसके क्रियाकलापो के अवशेष किस तरह बिखरे हुए हैं, इसका अध्ययन अधिवास प्रक्रिया के अर्न्तगत आता है ।(दुबे, 2005:51-57) अधिवास मानव समूह के संगठित स्वरूप को दर्शाता है। जिसमे घरो के प्रकार, सड़के, गलियाँ इत्यादि सम्मलित है।(चौरसिया, 2021:2023) प्रारम्भ मे मानव नदी घाटी व कन्दरा जैसे विभिन्न प्राकृतिक आवासो मे निवास करता था, परन्तु धीरे-धीरे उसने मैदानी भागो में स्थायी बस्तियाँ बसानी प्रारंभ की एवं कृषि और पशुपालन करने लगा।

सरयूपार क्षेत्र मे मानवीय गतिविधियो के संकेत प्रारम्भिक होलोसीन युग से ही मिलते है।(तिवारी, 2016:28), यह क्षेत्र मध्यगंगा घाटी का ही एक भाग है। जो उत्तर मे नेपाल की तराई तथा शिवालिक श्रेणी, दक्षिण-पश्चिम मे सरयूनदी तथा पूर्व मे गण्डक नदी से घिरा है। इसका अक्षांशीय विस्तार 26o 5’ उत्तर से 28o 30’ उत्तर तथा देशान्तरीय विस्तार 80o 57’ पूर्व से 84o 29’ पूर्व है। इसके कुल भू-भाग का क्षेत्रफल 33236 वर्ग कि.मी. है। जिसमे उत्तर प्रदेश के बहराइच, गोण्डा, बस्ती, श्रावस्ती, बलरामपुर, सिद्धार्थनगर, महराजगंज, संत कबीर नगर, गोरखपुर, देवरिया, कुशीनगर जिले शामिल है। सरयूपार का मैदान, सरयू, राप्ती, गण्डक तथा उनकी सहायक नदियो के जलोढ़ निक्षेपो से निर्मित है। जो उत्तर में भारत-नेपाल अर्न्तराष्ट्रीय सीमा द्वारा, दक्षिण-पश्चिम मे पश्चिम में पूर्व क्रमशः खीरी, सीतापुर, बाराबंकी, फैजाबाद, आजमगढ़ एवं बलिया जिला (उ.प्र.) तथा पूर्व में बेतिया, गोपालगंज तथा सीवांन जिला (बिहार) द्वारा सीमांकित होता है। (सिंह, 2009:1)

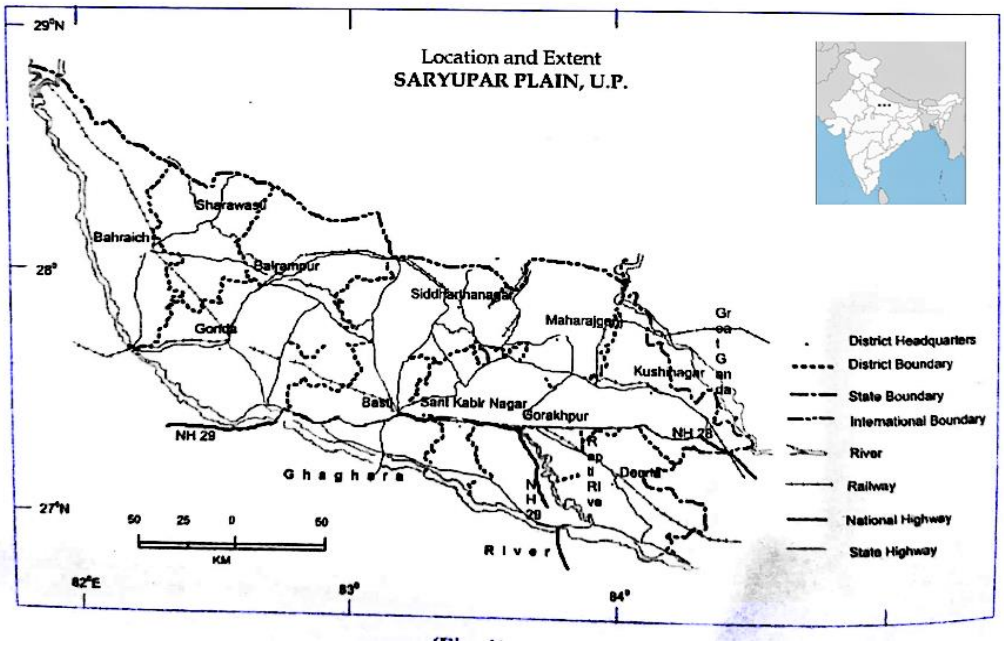

मानचित्र : सरयूपार क्षेत्र, उ.प्र. (साभार-पाण्डेय)

इस क्षेत्र में प्रथम महत्वपूर्ण पुरातात्विक 1960 के दशक में सोहगौरा का किया गया, जिसमें ताम्रपाषाण काल से पहले की पूर्वकालीन कृषि प्रावस्था समाने आयी। बाद में बहुत से पुरास्थलो का उत्खनन हुआ, जिसमे चिरांद, चेचर कुतुबपुर, नहरन, खैराडीह, इमलीडीह खुर्द, धुरियापार, वैना तथा लहुरादेवा आदि प्रमुख हैं। (तिवारी, 2016:20), इन पुरास्थलो से प्राप्त पुरावशेषो का कार्बनडेटिग के माध्यम से भिन्न-भिन्न तिथियाँ प्राप्त हुई है। सामान्यतः सरयूपार क्षेत्र ताम्रपाषाण काल को 1800 BC – 800 BC के मध्य रखा जा सकता है।

आवास

इन पुरास्थलो के उत्खनन से प्राप्त पुरावशेषो से पता चलता है कि इस काल के लोग लकड़ी व बास-बल्ली से निर्मित झोपडीनुमा घरो से निवास करते थे। बास-बल्ली पर मिट्टी का मोटा लेप लगाकर दीवार बनाते थे तथा मिट्टी को कूटकर फर्श का निर्माण करते थे।(वर्मा, 2018:162), जिसके साक्ष्य नरहन, खैराडीह, लहुरादेवा आदि पुरास्थलो से प्राप्त स्तम्भगर्त तथा बास की छाप से युक्त जली हुई मिट्टी के टुकडो के रूप में मिलते है। स्तम्भगर्त और चूल्हो के साथ नरकुल और मिट्टी के मकानो के अवशेष नरहन से प्राप्त होते है, खैराडीह से 1.06 मी. से 0.62 मी. तक चौड़ी मिट्टी की दीवाल के अवशेष मिले है। (वर्मा, 2018:168), इनके अवासीय योजना के बहुत स्पष्ट साक्ष्य तो नही मिलते परन्तु स्तम्भगर्त के निशान से पता चलता है कि सम्भवतः ये लोग गोलाकार या अण्डाकार झोपडियो मे रहते थे।

कृषि एवं पशुपालन

सरयूपार क्षेत्र में ताम्रपाषाणिक संस्कृति के लोग स्थायी जीवन व्यतीत करते थे। कृषि एवं पशुपालन इनके जीवन का प्रमुख अंग था। इस संस्कृति से सम्बन्धित सभी पुरास्थलो से प्रायः कृषि के प्रचुर साक्ष्य मिले है। धान, गेहूँ, जौ,मटर, मूँग, चना, बाजार, ज्वार, सावा, तिल, तीसी, खेसारी इत्यादि की खेती करते थे।(सिंह, 1993:47), परन्तु इन फसलो में धान प्रमुख था। मध्य गंगा घाटी मे धान की खेती के प्राचीनतम प्रमाण, सरयूपार क्षेत्र के ही पुरास्थल लहुरादेवा से मिलते है जहाँ रस्सीछाप मृदभाण्ड के टुकड़ो मे जली हुई धान की भूसी एवं कार्बनिकृत चावल के दाने के रूप में प्राप्त हुए हैं। (तिवारी, 2016:28), यद्यपि इसकी प्राचीनतम तिथि (9000-7000 BC) नवपाषाणिक स्तर से प्राप्त हुआ है, परन्तु यहा ताम्रपाषाणिक एवं परवर्ती स्तरो से भी धान के अवशेष मिलते है। इसके अतिरिक्त लहुरादेवा से गेहूँ, जौ, कंगनी, सांवा, कोदो, के अवशेष मिले है। (तिवारी, 2016:24),

नरहन से फसलो के साथ कटहल तथा बेर के साक्ष्य मिले है। यहाँ से सरसो के प्राचीनतम प्रमाण मिले है।(वर्मा, 2018:162), इमलडीह खुर्द से फसलो के अतिरिक्त बेर, ऑवला, अंगूर के प्रमाण मिले है। इससे स्पष्ट है कि कृषि इनके अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार था। सेनुआर के ताम्रपाषाणिक स्तर से वृहत पैमाने पर कृषि के संकेत मिलते है। (वर्मा, 2018:175), सोहगौरा, खैराडीह, लहुरादेवा आदि पुरास्थलो से कार्डेड किस्म के मृदभाण्डो से प्राप्त धान की भूंसी इस क्षेत्र की ब्रीही संस्कृति के उद्भव को दर्शाती है।(मणि, 2007:1), यद्यपि खेती इनके जीवन की विशेषता थी, परन्तु मांस और मछली भी भोजन के प्रमुख अंग थे । पशुओ की जली हुई हड्डियो पर काटने के निशान यहाँ के विभिन्न पुरास्थलो से प्राप्त हुए है। जिनमे जंगली एवं पालतू दोनो प्रकार के पशु है। गाय, बैल, भेड़, बकरी, सुअर, हिरण आदि की हड्डिया प्रचुर मात्रा में मिली है। साथ ही जलीय जीव मछली घोघे तथा कछुए के हड्डियो के अवशेष प्राप्त हुए है।(वर्मा, 2018:162), लहुरादेवा (तिवारी, 2004:32), तथा सेनुआर (वर्मा, 2018:173), से ताम्बे का मछली पकड़ने का काटाँ प्राप्त हुआ है, इन प्रमाणो से पशुपालन एवं शिकार के स्पष्ट संकेत मिलते हैं।

पात्रपरम्परा

इस संस्कृति के लोग विभिन्न प्रकार के मृदभाण्डो का प्रयोग करते थे। जिसमें चाक तथा हस्तनिर्मित दोनो प्रकार के थे। रस्सीछाप वाले मृदभाण्डो का इस संस्कृति मे विशिष्ट स्थान है। इनका सम्बन्ध सरयूपार क्षेत्र के आरम्भिक कृषि

अवस्था से स्थापित की जाती है ।(त्रिपाठी, 2002-03:70), मिट्टी मे सालन मिलाकर पात्रो का निर्माण किया जाता था। जो रूक्ष लाल पात्र होते है,(वर्मा, 2018:173), परन्तु सादे एवं चित्रित, काले-लाल पात्र, कृष्ण लेपित, लाल लेपित लाल और काले मृदभाण्ड, चमकदार काले व लाल मृदभाण्ड आदि व्यापक रूप से प्रचलन मे थे।(वर्मा, 2018:161-162), काले व लाल पात्रो मे कटोरे, गहरे तसले, घड़े आदि प्रमुख हैं। चिराद से कुछ पात्रो पर क्रीम रंग का लेप मिलता है, परन्तु इन सभी पात्रो में लाल पात्र परम्परा प्रमुख है।

उपकरण

इस काल के मानव ने उपकरण निर्मित करने के लिए पत्थर, हड्डी, ताम्बे तथा हिरण के सींग इत्यादि का प्रयोग करते थे।(त्रिपाठी, 2002-2003:70), ताम्र उपकरण सीमित मात्रा में ही प्राप्त हुए, परन्तु पत्थर और हड्डी के औजार पर्याप्त मात्रा में मिले है। हड्डी तथा ताम्बे के बाणाग्र, ताम्बे की मछली पकड़ने की कटिया, छेनी, छिद्रक, मृतिका, चकरी आदि प्रमुख उपकरण प्राप्त हुए है। साथ ही फ्लेक ब्लेड जैसे लघुपाषाणोपकरण, हथौड़े, सिल तथा ओपदार कुल्हाड़ी भी मिले है।

इस काल के मानव में आभूषणो के प्रति सहज आसक्ति थी। वह लटकन चूड़िया, छल्ले, कुण्डल, मनके आदि का प्रयोग करता था। जो अगेट, कार्नेलियन जैस्पर, सेलखडी, मिट्टी, हड्डी, सीप, फेयान्स तथा ताम्बे से निर्मित होते है।(त्रिपाठी, 2002-2003:70), मनको का प्रयोग बहुतायत मिलता है।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवरण के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सरयूपार क्षेत्र में मानव के स्थायी जीवन तथा कृषि एवं पशुपालन के जिन लक्षणो का सूत्रपात नवपाषाणकाल मे हुआ, वह ताम्रपाषाणकाल तक पहुचते-पहुचते अपने पूर्णता को प्राप्त हो गया। यहाँ से प्राप्त लघुपाषाणोपकरण, विन्ध्य क्षेत्र के मध्यपाषाणकालीन उपकरणो से साम्यता रखते है। जिससे संकेत मिलता है कि विन्ध्य क्षेत्र से चलकर मानव सरयू को पार कर कुआनो के तटो पर प्रारम्भिक होलोसीन युग में ही आ गया। प्रारम्भ में यह प्रवर्जन ऋतुनिष्ठ रहा होगा, परन्तु धीरे-धीरे स्थाई बस्तियाँ बसा कर कृषि एवं पशुपालन की शुरूआत किए होंगे। जिसके स्पष्ट साक्ष्य यहाँ से प्राप्त पुरावशेषो के कार्बनडेटिग तथा पुरावनस्पतियों के परीक्षण से मिलते है। कालान्तर में सरयूपार क्षेत्र ब्रीही संस्कृति के उद्भव एवं प्रसार के केन्द्र के रूप में विकसित हुआ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कुशवाहा, संजय कुमार-2021 *'प्रहलादपुर शिवाला (चन्दौली उ.प्र.) से प्राप्त पुरावशेषो का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य'* "इन्टरनेशनल जर्नल आफ हिस्ट्री", पृष्ठ सं. (1-5)

2. दुबे, अनिल कुमार-2005, *'मध्य गंगा घाटी में अधिवास प्रक्रिया(जौनपुर जनपद के विशेष सन्दर्भ में)'*, "स्वाभा प्रकाशन" इलाहाबाद पृष्ठ सं. (51-57)

3. चौरसिया, सुप्रिया-2021 *'छठी शताब्दी ई.पू. अधिवास प्रक्रिया(पश्चिमी उ.प्र. के सन्दर्भ में'* "इटर्निटी" वायल्यूम XII No.3, के.आर. पब्लिशर एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर, वाराणसी/नई दिल्ली पृष्ठ सं. (23)

4. तिवारी, राकेश-2016 *'लहुरादेवा मे प्राचीन कृषि व्यवस्था'* "पुराप्रवाह" क्रमाक-1 भारतीय पुरातत्व परिषद, नई दिल्ली पृष्ठ सं.(28)

5. सिंह, अजीत प्रताप-2009 *'सरयुघाटी की पुरासम्पदा' "प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग,* डॉ राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय" फैजाबाद (उ.प्र.) पृष्ठ सं.(1)

6. तिवारी, राकेश-पूर्वोक्त पृष्ठ सं.(20)

7. वर्मा, राधाकान्त एवं नीरा वर्मा-2018 *'पुरातत्व अनुशीलन'* भाग-2 "परमज्योति प्रकाशन" इलाहाबाद, पृष्ठ सं.(162)

8. पूर्वोक्त पृष्ठ सं.(168)

9. सिंह, बी.पी.-1993 *'फर्दर एक्सकेवेशन एट इमलीडीह खुर्द'* "प्राग्धारा" अंक-4 उ.प्र. रा.पु.वि. लखनऊ पृष्ठ सं. (47)

10. तिवारी, राकेश-पूर्वोक्त पृष्ठ सं.(28)

11. पूर्वोक्त पृष्ठ सं.(24)

12. वर्मा, राधाकान्त एवं नीरा वर्मा- पूर्वोक्त पृष्ठ सं.(162)

13. पूर्वोक्त पृष्ठ सं.(175)

14. मणि, बी.के.-2007 *'गर्भ मे छिपी एक प्राचीन सभ्यता'* "पुरवाई" अमर उजाला, गोरखपुर पृष्ठ सं. (1)

15. वर्मा, राधाकान्त एवं नीरा वर्मा- पूर्वोक्त पृष्ठ सं.(162)

16. तिवारी, राकेश एवं अन्य-2004 *'एक्सकेवेशन एट लहुरादेवा डिस्ट्रीक्ट संत कबीर नगर'* "पुरातत्व" क्रमांक 32 उ.प्र. रा.पु.वि. लखनऊ पृष्ठ सं. (54)

17.वर्मा, राधाकान्त एवं नीरा वर्मा- पूर्वोक्त पृष्ठ सं.(173)

18. त्रिपाठी, कृष्णा नन्द-2002-03 *'अ नोट आन द आर्कियोलाजिकल रिमेन कलेक्टेड फ्राम द लहुरादेवा माउण्ड'* "प्राग्धारा" अंक-13 उ.प्र. रा.पु.वि. लखनऊ पृष्ठ सं. (70)

19. वर्मा, राधाकान्त एवं नीरा वर्मा- पूर्वोक्त पृष्ठ सं.(173)

20. पूर्वोक्त पृष्ठ सं.(161-162)

21. त्रिपाठी, कृष्णा नन्द- पूर्वोक्त पृष्ठ सं.(70)

22. पूर्वोक्त पृष्ठ सं.(70)

23. पाण्डेय, के. धीरेन्द्रे एवं वी.एन. शर्मा-2012 *'लैण्ड यूज पैर्टन इन सरयूपार प्लेन, उत्तर प्रदेश : अ ज्योग्राफिकल एनलिसिस'* "नेशनल ज्योग्राफिकल जर्नल आफ इन्डिया-54(4)" बी.एच.यू. वाराणसी पृष्ठ सं. (54)